



Original Article

नागफनी आत्मकथा में चित्रित सामाजिक तथा आर्थिक उत्पीड़न

प्रा. शितल सचिन खैरमोडे

सहायक प्राध्यापिका

महिला महाविद्यालय, कराड

Manuscript ID:

IJAAR-C130344

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 218 - 221

Submitted: 29 Jan. 2026

Revised: 07 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. शितल सचिन खैरमोडे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786145

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786145>



Creative Commons



सार:

भारतीय समाज व्यवस्था विश्व की प्राचीनतम समाज व्यवस्थाओं में से एक है। भारत में विविधता में एकता दिखाई देती है। परंतु दलित साहित्य ब्राह्मणवादी समाज व्यवस्था की देन है। जो दलितों की संपूर्ण वेदना, उत्पीड़न, वंचना और पीड़ा से उत्पन्न अभिव्यक्ति। सवर्ण समाज की व्यवस्था, संस्कृति व हिंदू धर्म से उपजी मानसिकता का विरोध करता है। फलस्वरूप दलित साहित्य में इसका सशक्त विरोध सबसे पहले नागफनी आत्मकथा के रूप में उभर कर लोगों के सामने आया है। यह दलित आत्मकथा न केवल दलित व्यक्ति की जीवन कथा है बल्कि उसके अपने पूरे समाज की सच्चाई है। इन आत्मकथाओं की निर्मिती सवर्ण समाज के वर्चस्ववादी ताकतों द्वारा हाशिए पर धकेल दिए गए दलित जीवन की यात्राओं की पहचान होती है। इस आत्मकथाओं में समाज के उस भयावह एवं यातनापूर्ण वातावरण का चित्रण होता है। जो अब तक हिंदी साहित्य से लगभग अछूता रहा है। एक दलित व्यक्ति को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है? जाति का दंश उसके विकास में कैसे बाधक बनता है? यह दलित आत्मकथाओं में दिखाई देता है। दलित कितना भी शिक्षित हो जाए किंतु आजीवन उसे जाति का अभिशाप भुगतना ही पड़ता है। दलित किस तरह आज भी धार्मिक अंधविश्वास, परंपराओं, रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है यह सब दलित आत्मकथाओं में आईने की तरह साफ-साफ देखा जा सकता है। दलित आत्मकथा में लेखक ने अपने भोगे हुए यथार्थ के माध्यम से इस समाज के खोखले विचारों को प्रस्तुत किया है। दलित लेखकों ने अपनी आत्मकथाओं में बिना किसी अतिरिक्त भावावेश के दलित जीवन के निर्मम यथार्थ को वस्तुपरक ढंग से पाठकों के सामने अभिव्यक्त किया है।

मुख्य शब्द: आत्मकथा, दलित, सवर्ण, यथार्थ।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. शितल सचिन खैरमोडे. (2026). नागफनी आत्मकथा में चित्रित सामाजिक तथा आर्थिक उत्पीड़न. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 218 - 221. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786145>

प्रस्तावना:

दलित साहित्य भारतीय समाज व्यवस्था में सदियों से हाशिए पर धकेल दिए गए लोगों का साहित्य है। जिसमें उनकी पीड़ा, दुख - दर्द, तकलीफ, शोषण, अपमान आदि का वर्णन

किया गया है। एक ऐसा समाज जिसमें मानव - मानव में भेद कर उसे पशुओं से भी बदतर जीवन जीने के लिए मजबूर किया गया। उसे हर तरह के अधिकारों से वंचित किया गया। इस प्रकार दलित साहित्य ब्राह्मणवाद व्यवस्था के विरोध का



साहित्य है। एक सामाजिक क्रांति है। दलित साहित्य मनुष्य की समानता की बात करता है। उनमें ऐक्य की भावना पैदा करता है। दलित लेखकों द्वारा अपनी समस्याओं, कठिनाइयों अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के साथ-साथ संपूर्ण दलित समाज को ध्यान में रखते हुए लिखा हुआ साहित्य दलित साहित्य कहलाता है। इस संदर्भ में दलित साहित्य की परिभाषा अत्यंत संवेदनशील है डॉ. धर्मवीर कहते हैं कि, "दलित साहित्य वह है, जिसे दलित लेखक लिखता है।" 1

माता प्रसाद का भी कहना है कि, "दलित साहित्य वह साहित्य है जो सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक क्षेत्र में पिछड़े हुए उत्पीड़न, अपमानित, शोषण जनों की पीड़ा को व्यक्त करता है। दलित साहित्य कठोर अनुभवों पर आधारित साहित्य है। दलित साहित्य में आक्रोश और विद्रोह की भावना प्रमुख है।" 2 इससे स्पष्ट होता है कि, दलित आत्मकथाएं केवल व्यक्तिगत जीवन की कथा नहीं बल्कि पूरे समाज के संरचना अन्याय और संघर्ष का दस्तावेज है। नागफनी भी ऐसी ही आत्मकथा है जिसमें लेखक ने अपने जीवन अनुभव के माध्यम से भारतीय समाज के कठोर यथार्थ, विशेषताएं, जाति व्यवस्था और सामाजिक भेदभाव को उजागर किया है।

सामाजिक समस्या:

गांव में दलितों के लिए अलग-सी बस्ती है जहां चमार, कोरी, खटीक, भंगी, पासी, हरिजन आदि लोग रहते हैं। सवर्ण लोग दलितों से काम करवाते हैं। दलितों की शिक्षा, उन्नति उनको चुभती है। वह लोग उच्च शिक्षित दलितों को जोर जबरदस्ती से मजदूर बनाकर रखना चाहते हैं। सोनकर बिंदकी गांव में छात्रावास में रहते हैं। वहां उनके बड़े भाई उनसे मिलने के लिए जाते हैं। बिंदकी से नसेनियां 15 किलोमीटर दूरी पर है। लेखक के भाई उनको लेकर नसेनियां जा रहे थे।

तो बीच में घनघोर बारिश होने लगती है। वह पंडित मिश्रा जी के यहां रुकते हैं तो ब्राह्मण मिश्रा उनका आवभगत करता है। सहानुभूति दिखाते हुए कहते हैं कि, "इतनी घनघोर वर्षा और दरिया में साइकिल खींचते खींचते बहुत परेशान हो जाओगे। यह छोटा लड़का बहुत थक जाएगा। हमारे घर में पूरी रामदाया है चारपाई है। आप लोग यही खाना खाकर सुबह होते ही आप लोग चले जाइए।" 3 लेकिन जैसे ही उनको पता चलता है कि सोनकर और उसके भाई खटीक जाति के हैं तो सामने रखा खाना भी पंडित ले जाते हैं। पंडित के मां चिल्लाते हुए बोलती है कि "राम - राम सारा घर भ्रष्ट कर दिया। इन अछूतों को घर में घुसने की क्या जरूरत थी?" 4 प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि गांव के सवर्ण लोग दलितों को अपमानित करने का एक भी मौका नहीं छोड़ते थे।

जब सोनकर अकेले बिंदकी से नसेनिया पैदल अपने गांव आ रहे थे। तब उनको बहुत जोर की प्यास लगती है। वह रास्ते में कुएं का पानी पीते हैं एक जनेउधारी ब्राह्मण उन्हें देखता है और लाठी लेकर कुएं के पास आता है। इस संदर्भ में प्रस्तुत कथन देखिए -

"साले तूने अपने आप कुएं से पानी निकाल कर बाल्टी में लोटा डालकर पी लिया। मैं तुझे जानता हूं। तू अछूत है।

"पंडित जी मैं बहुत प्यासा था।"

तूने किसी को आवाज क्यों नहीं दी।

उस समय वहां पर कोई नहीं दिखाई दे रहा था।

"साले थोड़ी देर इंतजार कर लेता तो क्या प्यासा मर जाता।

उतर कुएं की जगत से नीचे।" 5

कहते हुए ब्राह्मण ने लाठी से लेखक के सर पर प्रहार किया उनके सर से खून की धाराएं बहने लगी यहां पर यह स्पष्ट होता है कि सवर्णों ने सदियों से दलितों पर अन्याय, अत्याचार किया है।



हरिशंकर अवस्थी एक खूंखार किस्म का ब्राह्मण था। पहले वह पुलिस में सिपाही था। वह मुक्त में गांव के लोगों से काम करवाता। उसके बुलाने पर अगर कोई दलित नहीं आता तो वह उसे डंडे से पिटवाता। एक दिन उसने भदइयां चमार को बुलाया वह जल्दी न पहुंचने पर हरिशंकर अवस्थी ने उसे बहुत पीटा। इस संदर्भ में प्रस्तुत कथन देखिए - "हरामजादे ! मैं तुझे छोड़ दूँ कई दिनों से मैं तुझे बुला रहा हूँ, आ नहीं रहा है, साले ! लाट साहब हो गया।" 6

प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि समाज में स्थित उच्च वर्ण के लोग निम्न वर्ग के वर्ग के साथ अपनी मनमानी करवाते थे। वह उन्हें मनुष्य समझने से अधिक पशु ज्यादा समझते हैं इस तरह पशुओं जैसे हरकत उनके साथ करते हैं।

सोनकर जब अपने मित्र के कहने पर मंदिर में रामचरितमानस का पाठ पढ़ाने के लिए बैठे थे। तब शिवभजन अवस्थी ने उन्हें देखा और वह आग बबूला हो गया गाली देते देते हुए बोल उठा " साले ! हम लोगों के बीच में बैठकर कैसे रामायण की चौपाई पढ़ रहा है। इस साले अछूत को किसने चौपाई पढ़ने के लिए कहा ?" 7

सोनकर ने अपनी आत्मकथा में सवर्ण समाज के धार्मिक पाखंड का भी चित्रण बड़े मार्मिक ढंग से किया है। समाज में कई तरह के त्यौहार प्रचलित थे। जो सवर्ण के लिए जरूरी थे। लेकिन दलितों के लिए मनाही थे। ऐसा ही एक धार्मिक कार्य ज्यो उगाने का भी था। दूसरी ओर देवी का आशीर्वाद पाने के लिए दलित और पिछड़े समुदाय के लोग अपने गालों से लोहे के छड़ को आर - पार करवाते। इस तरह से कई अंधविश्वास दलित समाज में मौजूद थे। इस धार्मिक कार्य में ब्राह्मण दलितों को प्रोत्साहित भी करते थे। सोनकर बताते हैं कि सांग छेदाने वाले अधिकतर दलित और पिछड़ी जाति के लोग होते थे। अपवाद स्वरूप ही कोई ब्राह्मण और

ठाकुर अपने गालों से सांग लगवाते थे। दलित और पिछड़ों को सांग छिदवाने के लिए ब्राह्मण सदैव प्रोत्साहित किया करते थे।

आर्थिक समस्या:

नागफनी आत्मकथा में दलित जीवन की भीषण आर्थिक स्थिति का यथार्थपूर्ण चित्रण किया गया है। गांव में तीन-चार ब्राह्मण थे जो दलितों पर अन्याय करते थे। एक बार यदि किसी दलित को पैसे या अनाज उधार दिया तो वह दलित जिंदगीभर उसके ऋण चुका नहीं पता था। एक साल लेखक को अपने खेती से 12 मन धान प्राप्त हुआ। तो शिवदत्त मिश्रा नामक ब्राह्मण ने उनका सारा धान जबरदस्ती लिया। क्योंकि डेढ़ पसेरी धान सोनकर के पिता ने उधार लिया था। तो शिवदत्त मिश्रा ने उसके बदले ब्याज सहित 12 मन धान उनसे जबरदस्ती उसूल किया। इस संदर्भ में प्रस्तुत कथन देखिए –

"जब तुम्हारे पिता ने हमसे धन उधार लिया था उसे समय बड़ा अच्छा लगा था अब ध्यान देने में तुम्हारी छाती फट रही है।"

"डेढ़ पसेरी धान के 12 मन धान कैसे ले लेंगे?"

उसे समय तुम्हारे पिता ने धन समय से न लौटाने पर प्रतिदिन एक शेर ब्याज लेने के लिए हामी भरी थी। तब से अब तक 15

मन हो गए हैं। तीन मन में बाद में वसूलूंगा।"

डॉ. साहब ने कहा यह सरासर अन्याय है आपकी गुंडगी है।" 8 प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि सवर्ण किस प्रकार से दलितों पर अन्याय एवं अत्याचार करकर अपनी मनमानी करते हुए दलितों पर हावी होते थे।

लेखक ने अपनी आत्मकथा नागफनी में दलितों की दशा का चित्रण करते हैं कि, उनके पास खेत खलिहान नहीं थे। क्योंकि उनके पूर्वजों के पास जमीन जायदाद नहीं थी। यही हाल पूरे गांव के दलितों का था। दलितों की आर्थिक समस्या



का सबसे बड़ा कारण उनके पास उचित जमीन न होना ही था । इसी कारण दलित सवर्ण और जमींदारों के यहां मजदूर और गुलाम होने के लिए विवश बने इस संदर्भ में सुनकर कहते हैं - " देहातों में भयंकर गरीबी है । जिनके पास खेत नहीं है । वह दूसरे के खेतों पर मजदूरी करके अपना व अपने परिवार का भरण पोषण करते हैं । बड़ी मुश्किल से दो वक्त की रोटी जुटा पाते हैं । भूखे पैसे रहकर भी दबंग लोगों की बेगारी करनी पड़ती है ।" 9 दलित अगर पढ़ लिख कर बड़े अधिकारी पद की नौकरी प्राप्त करना चाहता है तो उसकी राह में कहीं तरह की बाधा उत्पन्न की जाती है । सोनकर जब आई .ए.एस की परीक्षा के लिए अपने सीनियर कर्मचारी से लीव विदाउट पे पर छुट्टी की मांग करते हैं तो उनकी छुट्टी मंजूर नहीं की जाती सवर्ण सीनियर कर्मचारी अन्य सवर्ण कर्मचारियों से कहता है कि, "साले खटीक कलेक्टर बन गए तो सब्जी कौन बेचेगा ? इसका दिमाग खराब हो जाएगा । यह हमसे अपने से बड़ा मानने लगेगा । इन दलितों को आप सर पर बैठा रहे है । कार्यालय में इनकी औकात बढ़ जाएगी, इसकी औकात बढ़ने का मतलब है हमारी औकात का घट जाना ।" 10 दलितों के प्रति इस तरह का व्यवहार कोई बड़ी बात नहीं है और इस तरह से उनकी आर्थिक प्रगति को लगातार रोकने की कोशिश की जाती है ।

निष्कर्ष:

नागफनी में चित्रित सामाजिक यथार्थ भारतीय समाज की गहरी असमानताओं को उजागर करता है । लेखक ने बचपन से झेली गरीबी ,अपमान और अस्पृशता के बावजूद हार नहीं मानते । शिक्षा को हथियार बनाकर सामाजिक सम्मान प्राप्त करते है । लेखक का कहना है कि दलितो कि समस्या व्यक्तिगत समस्या नहीं है बल्की सामाजिक समस्या है समाज में बराबरी तभी संभव जब दृष्टी बदले । नागफनी यह आत्मकथा कि अलग पहचान दिखाई देती है अन्य दलित साहित्य में दलितो ने अन्याय ,अत्याचार कैसे सहा यह बात दिखाई है परंतु इस आत्मकथा में सदियों से चली आ रहीरिती - रिवाज परंपराए जो दलितो को शर्मिन्दगी महसूस करती है इस बात का लेखन ने खंडन – मुंडन किया है । नागफनी केवल दुख का वर्णन नहीं करती बल्कि प्रतिरोध और जागरण की भी कहानी है ।

संदर्भ सूची:

1. दलित साहित्य के प्रतिमान, पृष्ठ क्र.69
2. दलित साहित्य के प्रतिमान पृष्ठ क्र.70
3. नागफनी, रूपनारायण सोनकर, शिल्पायन प्रकाशन पृष्ठ क्र.22
4. वही पृष्ठ क्र. 23
5. वही पृष्ठ क्र. 24